तेलुगु भाषा में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली का विकास

डॉ. सूर्य कुमारी.पी.

हिन्दी विभाग,
हैदराबाद विश्वविद्यालय,
हैदराबाद-500046
suryakumariharshita@gmail.com
M. No. 9652425545

भारत में परंपरागत रूप में संस्कृत, अरबी और फ़ारसी में प्रचलित ज्ञान का प्रचार था। उस समय विज्ञान और प्रौद्योगिकी शिक्षा अंग्रेजी में ही दी जाती थी। सन् 1784 में कलकत्ता में सर विलियम जोन्स ने एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना की और इस के माध्यम से इन्होंने भारत में नयी वैज्ञानिक रुचि को प्रेरणा दी। उन्नीसवीं सदी के मध्य से एशियाटिक सोसाइटी ने चिकित्साशास्त्र, रसायनशास्त्र, भू-विज्ञान और भौतिकी में शोध-पत्र प्रकाशित करना आरंभ कर दिये थे। इन सोसाइटियों ने भारत में वैज्ञानिक क्षेत्र में रुचि जागृत करने, वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित करने में प्रमुख योग दिया।

1. तेलुगु भाषाओं में वैज्ञानिक शब्दावली निर्माण के आरंभिक स्रोत

वास्तव में भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक शब्दावली बनाने के दिशा में महाराज शिवाजी ने प्रेरणा दी। शिवाजी का आदेश पाकर श्री रघुनाथ पंत ने 1500 शब्दों का एक शब्द संग्रह राजकोश नाम से किया था। इस कोश में प्रशासन, भवन-निर्माण सामग्री, खाद्य-पदार्थ और अलग-अलग व्यवसायों से संबंधित शब्दों का संग्रह किया गया था। इनमें से कुछ शब्दों का निर्माण किया गया था। इस कोश में शब्द संग्रह के दस भाग हैं। इस संग्रह में गढ़े गये शब्द संस्कृत भाषा से लिये गये थे। भारतीय भाषाओं में मुख्य रूप से तेलुगु भाषाओं में 1800 के आस-पास पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण प्रारंभ हुआ था। पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण की इस प्रक्रिया में अलग-अलग विषयों को लेकर पाठ्य-पुस्तकें तैयार की गयी। इन पाठ्य-पुस्तकों में विज्ञान विषय से संबंधित पाठ्य-पुस्तकें भी दिखाई देती हैं। इन पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण अंग्रेजी पाठ्य-पुस्तकों के अनुकरण पर हुआ था। इसलिए इन पाठ्य-पुस्तकों में अंग्रेजी शब्दों का अनुवाद करते हुए तेलुगु में शब्दावली के निर्माण का प्रयास किया गया था। विशेष रूप से शरीर विज्ञान या शरीर रचना-विज्ञान को लेकर पुस्तकें लिखी गयी थी। इस प्रकार से अंग्रेजी और तेलुगु भाषाओं में अंग्रेजी से आधुनिक विज्ञान की पुस्तकों के अनुवाद के द्वारा वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण का प्रारंभ हुआ था। अंग्रेजी और अन्य यूरोपीय भाषाओं में विकसित आधुनिक वैज्ञानिक विषयों को अनुवादों द्वारा तेलुगु भाषी पाठकों तक ले जाने की इच्छा के कारण तेलुगु भाषाओं में वैज्ञानिक शब्दावली को विकसित करने की ओर ध्यान गया। डॉ. ओमप्रकाश शर्मा ने स्पष्ट किया था कि -"11 सितंबर 1823 ई. को राजा राममोहन राय ने यूरोपीय वैज्ञानिक ज्ञान को भारतीय जनता को उपलब्ध करने के बारे में एक पत्र के दौरान गवर्नर जनरल रम्महर्स्ट को लिखा था - इस देश में एक ऐसे उदार, ज्ञानमय शिक्षा संगठन की आवश्यकता है जिसके द्वारा गणित, रसायनशास्त्र, शरीरशास्त्र और विज्ञान के अन्य विषयों की शिक्षा भी उपलब्ध हो सकें। आरंभ से लेकर अब तक इस विषय के विशेषज्ञों और विद्वानों के इस बारे में दो मत रहे हैं कि अंग्रेजी की वैज्ञानिक शब्दावली को ज्यों का त्यों भारतीय भाषाओं द्वारा अपना लिया जाय, अथवा उसका अनुवाद कर दिया जाय।"[1]

2. तेलुगु भाषा में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली के विकास के स्रोत

भारत की भाषाओं में आधुनिक विज्ञान की पाठ्य-पुस्तकों को तैयार करके पढ़ाने का महत्वपूर्ण कार्य अंग्रेजों के शासन काल में आरंभ हुआ। वैज्ञानिक शब्दावली के प्रयोग के लिए पहले पाठ्य-पुस्तकें तैयार की जानी चाहिए। वैज्ञानिक

1. वैज्ञानिक शब्दावलीः इतिहास और सिद्धांत, ओमप्रकाश शर्मा, पृ-131.

शब्दावली का प्रयोग कैसे करने से अर्थ-विस्तार और अर्थ-संकोच से संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं के समाधान के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण करना आवश्यक है। भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक शब्दावली का निर्माण करते समय दो बातों के प्रति ध्यान देना चाहिए। 1.भारत में अलग-अलग क्षेत्रीय भाषाओं में विज्ञान की अभिव्यक्ति से संबंधित सभी समस्याएँ कैसे सामने आ रही है और 2. विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं की बोलियों में देशज शब्दों के अर्थ को समझना भी इस संदर्भ में जरूरी है। क्योंकि देशज शब्द प्रचार-प्रसार में आ गये थे। इसके अलावा कुछ शब्दों का निर्माण संस्कृत धातुओं के बल पर हुआ था।

ईसा पूर्व 12 वीं शताब्दी में लगभग 3200 साल पहले 'लगडा' नामक एक ऋषि ने 'वेदांग ज्योतिषम्' नामक एक ग्रंथ लिखा था। उन्होंने गणित को लेकर विस्तार से चर्चा की। ज्योतिष शास्त्र का आधार गणित है। उसके बाद यूरोप में कई वर्षों तक नये आविष्कार नहीं हुए। ईसा पूर्व 12वीं शताब्दी में भारतीय विज्ञान के 'भास्कराचार्युलु' ने अंग्रेजी के Differential calculus का आविष्कार किया था, उसे (तात्कालिक गति) अस्थायिता कहा गया था। इसी गति को हम (चलनकलनं) करते हैं। ई.17 वीं शताब्दी में यूरोप में 'न्यूटन' और 'लीबनिज' नामक दो वैज्ञानिकों ने Differential calculus का आविष्कार किय था। प्राचीन संस्कृत गणितशास्त्र में rational irrational numbers को ही प्राचीन भारत में (अकरणिगत और करणिगत) संख्य कहा गया। तेलुगु में उनका प्रयोग किया जा रहा है। गणित की कई अवधारणाओं की शुरुआत भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा ही हुई। प्राचीन भारत में रसायन विज्ञान का विकास दार्शनिकों **पतंजलि** और **नागार्जुन** द्वारा किया गया था। आचार्य नागार्जुन आंध्र प्रांत के थे। 'sublimation', 'fixation' जैसे शब्दों को अचेतन और निर्धारण, (ऊर्ध्व पतनं, स्तंभनं) शब्दों का प्रयोग किया गया था।

3. तेलुगु में शब्दावली का विकास

1850 के बाद जब तेलुगु में वैज्ञानिक ग्रंथों का लेखन आरंभ हुआ था तब यूरोपीय भाषाओं में मानक ग्रंथों का अनुवाद तेलुगु भाषा में भी होने लगा। तेलुगु भाषियों की शिक्षा अपनी मातृभाषा में होनी चाहिए। इस लक्ष्य से यह अनुवाद कार्य हुआ था।1909 तक एशियाटिक सोसाइटी ने संस्कृत पुस्तक 'रसवर्णम्' नामक ग्रंथ को प्रकाशित किया था। इसका ऐतिहासिक महत्व भी है। ओ.पी. शर्मा ने कहा कि - इस प्राचीन संस्कृत शब्दों को प्रकाश में आने के बाद से ही रसायनशस्त्र की परिभाषा तैयार करना बहुत सरल हो गया। भारतीय भाषाओं और आधुनिक समय में रसायन विज्ञान के लेखन के लिए इस पुस्तक की शब्दावली उपयोगी है। कुल मिलाकर तेलुगु की शब्दावली के निर्माण में भी संस्कृत भाषा की परंपराओं की भूमिका होती है।

4. तेलुगु शब्दावली के विकास की प्रक्रिया

भारतीय भाषाओं में मुख्य रूप से द्रविड़ परिवार की भाषाई साहित्य की भाषाओं के रूप में विकसित हुई। लेकिन लोग सामान्य व्यवहार में कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग किया करते थे, जिनके बल पर विशेष वस्तु, प्राणि, वनस्पति और रसायनों का बोध होता था। तेलुगु भाषा में गद्य का विकास अंग्रेज़ों के आगमन के बाद ही हुआ था। अंग्रेज़ी शिक्षा पध्दति के विकास के साथ-साथ विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों का परिचय देने के लिए पारिभाषिक शब्दावली निर्माण का प्रयास किया गया था।

संविधान के 8 वें अनुच्छेद में 14 भारतीय भाषाओं को आरंभ में स्वीकार किया गया था। इसके बाद 1956 में भाषाओं के बल पर जब क्षेत्रों का विभाजन हुआ था तब से तेलुगु भाषा का महत्व का बढ़ गया। तेलुगु भाषा के माध्यम से पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण की प्रक्रिया हुआ। पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण स्वतंत्रता से पहले तेलुगु भाषा में जो कुछ भी प्रयास हुए, वे वैयक्तिक धरातल पर ही हुए। कुछ विद्वान विज्ञान आधुनिक विज्ञान से संबंधित लेख लिखते थे। वे अंग्रेज़ी शब्दों से अनुवाद करते हुए तेलुगु के शब्दों का निर्माण किया करते थे।

आन्ध्रप्रदेश सरकार की ओर से 1966 में तेलुगु भाषा के विकास के लिए कदम उठाये गये। 1968 में तेलुगु अकादमी की स्थापना की गयी थी। तेलुगु अकादमी की ओर से पाठशाला की शिक्षा से लेकर महाविद्यालय शिक्षा स्तर

तक पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण का कार्य किया गया था। तेलुगु भाषा के माध्यम से पाठ्य-पुस्तकों को तैयार करने में 21 ज्ञान क्षेत्र से संबंधित तेलुगु शब्दावलियाँ तैयार की गई थीं।

तेलुगु में वैज्ञानिक शब्दावली के विकास के लिए संस्कृत भाषा की सहायता ली गई। जिस तरह से अन्य भाषाओं में संस्कृत भाषा की धातुओं के बल पर पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण किया गया। ठीक उसी तरह से पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण करने की कोशिश की गई है। तेलुगु द्रविड़ परिवार की भाषा है। संस्कृत शब्दावली का प्रभाव तेलुगु भाषा पर होने के बावजूद प्रयोग के धरातल पर तेलुगु में संस्कृत शब्दों की स्वीकृति कुछ भिन्न रूप में हुई है। कभी-कभी तेलुगु में संस्कृत के शब्द भिन्न अर्थ का प्रतिपादन करते हैं। वैज्ञानिक और तकनीकी आयोग की ओर से विकसित नियमों के अनुसार तेलुगु में भी 1969 में कुछ सूत्रों का विकास किया गया है। फिर भी तेलुगु में इसके पहले गठित पारिभाषिक शब्दावली और वर्तमान वैज्ञानिक संकल्पनाओं की समझ में कुछ अंतर देखने को मिलता है।

भारत एक विशाल गणतंत्र राज्य है, इसमें विविध धर्म, जाति संस्कृति के लोग रहते हैं। यहाँ भिन्न-भिन्न भाषा परिवारों की भाषाएँ बोली जाती है। भारत का कोई भी प्रदेश एक भाषिक प्रदेश नहीं है। बहु भाषाई समाजों में संप्रेषण के लिए राज्य और राष्ट्र स्तर पर संपर्क भाषाओं की आवश्यकता होती है। स्वतंत्रता आन्दोलन के समय से भी हिन्दी का संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग किया जाता रहा है। हिन्दी के साथ-साथ भारत की अन्य भाषाएँ यानी हर क्षेत्र के अपने राज्यों की भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में त्रिभाषा सूत्र को अपनाया गया। किसी भी विषय की अभिव्यक्ति में पारिभाषिक शब्दावली का बड़ा महत्व रहता है। सहज भाषा (natural language) की तुलना में किसी वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों के वर्णन में यह विशेषता दिखाई देती है। किसी विशिष्ट विषय (specialized subject) को समझने-समझाने का काम पारिभाषिक शब्दावली के बिना सम्भव नहीं है।

5. तेलुगु भाषा में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के विकास का संस्थागत प्रयास

1910 के आसपास तेलुगु में वैज्ञानिक रचनाओं का लेखन एवं प्रचार-प्रसार होने लगा। तेलुगु भाषा के मूल या प्रथम पुरुष के रूप में **'कंदुकूरि वीरेषलिंगम् पंतुलु'** को मानते है। इन्होंने तेलुगु में पहली पाठ्य-पुस्तक लिखी। 19 वीं शताब्दी में **रेवरेण्ड फ़ॉदर फ़िष् ग्रीन** ईसाई धर्म प्रवर्तक ने तमिल और तेलुगु दोनों भाषाओं में परिभाषाओं के लिए प्रयास किया। 1968 ई. में तेलुगु भाषा संस्था में एक लाख पच्चीस हज़ार पारिभाषिक शब्दों का संकलन किया गया। इस कार्य में अकादमी के सरकारी ही नहीं विभिन्न विद्या संस्थाओं में काम करने वाले कर्मचारियों ने भी भाग लिया। बाद में अनेक विद्वानों ने भी इस कार्य में भाग लिया। 1950 ई. में उस समय के विधानसभा अध्यक्ष **'अय्यदेवर कालेश्वर राव'** जी के नेतृत्व में पहली बार प्रशासन की परिभाषाओं से पारिभाषिक पदकोश या शब्दकोश का आविष्कार हुआ था।

स्वतंत्रता के बाद 1950 में केन्द्र सरकार ने शास्त्र-परिभाषा के लिए पहली बार एक संस्था की स्थापना की। उसी को 'Board of Terminology' कहते हैं। समिति ने विविध शास्त्रों के शब्द और तकनीकी शब्दों को संग्रहित किया। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने शास्त्र-परिभाषा का एक समग्र पदकोश को तैयार किया। उसके बाद CSTT ने 9 अलग-अलग शास्त्र और संस्थाओं को शामिल करते हुए शास्त्र और पद-कोशों के निर्माण का कार्य किया। सरकार ने भारतीय भाषाओं में परिभाषिक शब्दों के निर्माण के कार्यक्रम को एक प्रधान कार्य के रूप में प्रारंभ किया। इसके लिए सन् 1960 अप्रैल में राष्ट्रपति का आदेश जारी किया गया था। उसका सारांश इस प्रकार है- आधुनिक भारतीय भाषाओं में विज्ञान की शब्दावलियाँ जितनी संभव हो सके उनमें एकरूपता होनी चाहिए। उसके साथ भाषाओं की सहजता और विशेषता को भी सुरक्षित रखा जाए। इसी उद्देश्य से 1960 में इस कार्य का आरंभ हुआ था। आगे जाकर 1961 में CSTT (Commission for Scientific Technical Terminology) नामक से संस्था का आरंभ किया गया था।

CSTT संस्था का दूसरा लक्ष्य, उच्च शिक्षा संस्थानों में, विश्वविद्यालयों के स्तर पर भारतीय भाषाओं में भी शिक्षा माध्यम के रूप में लागू करने के लिए वैज्ञानिक शब्दावली को तैयार करना था। इसके अनुसार पाठ्य-पुस्तक, पठनीय पुस्तक, स्रोत ग्रंथों (Reference Books) को भी तैयार किया गया। विश्वविद्यालय आयोग के पूर्व अध्यक्ष,

प्रसिद्ध शिक्षाविद् डॉ. डी. एस. कोठारी ने केन्द्र सरकार को दी गई अपनी रिपोर्ट के अनुसार, राज्य के शासकों से अनुरोध किया था कि उच्च शिक्षा माध्यम के रूप में तेलुगु का प्रचार किया जाय।

6. तेलुगु - शब्द विचार: वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के संदर्भ में

तेलुगु में शब्दों को इसी दृष्टि से देखा जा सकता है। प्राचीन भारतीय आर्यभाषा अर्थात् संस्कृत से सीधे लिये गये शब्द तत्सम कहलाते हैं, जो बिना किसी आंतरिक परिवर्तन के हिन्दी और तेलुगु में प्रयुक्त होते हैं। जिन शब्दों का संबंध संस्कृत से अथवा किसी विदेशी भाषा से स्थापित नहीं होता, पर हिन्दी वे तेलुगु में प्रचलित हो गये हैं, वे देशी अथवा देशज शब्द कहलाते हैं। तेलुगु भाषा में विदेशी शब्द, अरबी, फ़ारसी, तुर्की, तातरी, आर्मिनी, पुर्तगली, अंग्रेजी और फ्रांसीसी आदि विदेशों की भाषाओं से लिए हुए हैं। तेलुगु भाषा उपभाषा की अवस्था पार कर, परिनिष्ठित साहित्यिक भाषा के रूप में विकसित हो गयी है। तेलुगु भाषा में तत्सम शब्दों की संख्या नित्यप्रति बढ़ती जा रही है।

19 वीं शती में तेलुगु भाषा में भी संस्कृत शब्दों को ग्रहण किया गया है। वास्तव में तेलुगु भाषा की उपयोगिता तथा अभिव्यंजना-शक्ति के विस्तार के साथ-साथ तत्सम शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग स्वाभाविक ही दिखाई देता है। एक भिन्न दृष्टि से तेलुगु के शब्दों को तत्सम, तद्भव, देशी और ग्राम्य नामक वर्गों में विभाजित किया गया है। संस्कृत और प्राकृत के शब्द बिना परिवर्तन के जब प्रयुक्त होते हैं तो तब वे तत्सम शब्द कहलाते हैं। संस्कृत और प्राकृत के वे शब्द जो तेलुगु ध्वनि रीतियों के अनुसार विकृत हो गये हैं, उन्हें तद्भव कहा गया है। जिन शब्दों का संबंध संस्कृत और प्राकृत से नहीं है और तेलुगु देश में प्रचलित हैं अथवा तमिळ और कन्नड़ आदि अन्य देशी भाषाओं से ग्रहण किये गये हैं, वे सब देशी शब्द कहलाते हैं। ग्राम्य शब्द वे हैं जिनका प्रयोग शिष्ट लोग नहीं करते। शिष्ट-व्यवहार से भिन्न प्रयोग ग्रामीण जनता किया करती है। ग्राम्य शब्दों का विभाग शब्दों की व्युत्पत्ति की दृष्टि से किया हुआ नहीं है। लेकिन प्रयोग और रूढ़ि के बल पर उन शब्दों को ग्राम्य शब्द कहा गया है।

तेलुगु में आम तौर पर संस्कृत शब्द समान अर्थ में ही प्रयुक्त होते हैं। परंतु ऐसे शब्दों की संख्या भी कुछ कम नहीं है जो प्रयोग परंपरा के कारण भिन्न अर्थों में रूढ़ हो गये हैं। संस्कृत के शब्दों का अर्थ परिवर्तन किस प्रकार हुआ है। उदाहरण के लिए –

संस्कृत शब्द	**हिन्दी में प्रचलित अर्थ**	**तेलुगु में प्रचलित अर्थ**
अवसर	समय, मौका	आवश्यक, आवश्यकता
अभ्यंतर	भीतर	आपत्ति, रोक, मनाही
आलोचना	विमर्श, टीका टिप्पणी	सोचना, युक्ति
उपन्यास	गद्य काव्य	भाषण, व्याख्यान

7. तेलुगु भाषा के विकास में तद्भव शब्द

तेलुगु में सैक़ड़ों तद्भव शब्द पाये जाते हैं। उनमें से कुछ का प्रयोग साहित्यिक भाषा में होता हैं। बोलचाल की भाषा में उनका प्रयोग बहुत ही कम होता है। अधिकांश तद्भव शब्द अपभ्रंश से प्राप्त हुए। जब कि तेलुगु ने उन्हें सीधे प्राकृत से लिया है। इस कारण से तेलुगु के शब्द रूप पूर्ववर्ती दिखाई देते हैं। उदाहरण के लिए **संस्कृत**- अग्नि—**प्राकृत**- अग्गि—**तेलुगु**- अग्गि। भाषा शास्त्र की दृष्टि से अग्गि **पूर्वरूप** है तथा आग को उससे सरलीकृत **पररूप** कहा जा सकता है।

आंध्रा के शातवाहन तथा इक्ष्वाकु शासकों ने प्राकृत भाषा को प्रोत्साहन दिया था। उनके समय में बौध्द धर्म का प्रचार देश भर में हुआ था। बौध्द धर्म के समय पाली और प्राकृत का भी प्रचार हुआ था। तेलुगु प्रान्त में ई. 400 तक के अभिलेख प्राकृत भाषा में ही मिलते हैं। राष्ट्रकूट और चाळक्य राजाओं के समय में जैन धर्म को आंध्र में प्रश्रय मिला था। तेलुगु के कवि और विद्वानों ने अपभ्रंश में भी ग्रंथ रचे थे। शिक्षित वर्ग में प्राकृत काव्यों का पठन-पाठन संस्कृत के साथ- साथ 16 वीं शती तक होता रहा। तेलुगु भाषा का मूल स्त्रोत प्राचीन द्राविड़ भाषा है। किन्तु संस्कृत तथा प्राकृत के साथ इस भाषा का घनिष्ठ सम्पर्क रहा है। इसी कारण से तेलुगु वाड्मय में ठेठ देशी शब्दों की अपेक्षा तत्सम और तद्भव शब्द अधिक संख्या में प्रयुक्त हुए।

8. हिन्दी-तेलुगु भाषाओं में विदेशी शब्द

चौदहवीं शती के आरंभ में मुसलमान दक्षिण भारत में आये। उन्होंने लम्बे समय तक दक्षिण के बहुत बड़े भूभाग पर शासन किया। उनके शासनकाल में अरबी, फ़ारसी और तुर्की भाषाओं के सैकड़ों शब्द तेलुगु भाषा में प्रचलित हुए। केवल बोलचाल में ही नहीं साहित्यिक रचनाओं में भी वे शब्द बहुत बड़ी संख्या में दिखाई देते हैं। ज़िला, रकम, रोयत, तहसील और कचहरी जैसे प्रशासकीय शब्दों के अतिरिक्त ऐसे बहुत से शब्द हैं जिनके पर्यायवाची तेलुगु में मुश्किल से मिलते हैं।

तेलुगु भाषा का विकास भी देशी बोली में संस्कृत शब्दों के ग्रहण की प्रक्रिया से हुआ था। 1000 ईसा के बाद संस्कृत से महाभारत के अनुवाद की प्रक्रिया के संदर्भ में सैकड़ों संस्कृत शब्द तेलुगु भाषा में आ गये और तेलुगु भाषा की विकास दिशा का निर्देशन हो गया था। मुगल शासन काल में तेलुगु भाषा पर अरबी और फ़ारसी शब्दों का प्रभाव पड़ा और उर्दू भाषा का भी विकास हुआ था। अंग्रेजों के आगमन के बाद दोनों भाषाओं में अंग्रेजी शब्द भी आने लगे। इस तरह से क्रमशः भाषाएँ संमृद्ध होती गयी विज्ञान और तकनीकी विकास भी होने लगा। पारंपरिक रूप में संस्कृत में प्रचलित आर्युर्विज्ञान, खगोल-विज्ञान और धातु-विज्ञान जैसे क्षेत्रों से संस्कृत के तत्सम शब्दावली को स्वीकार किया गया था। फिर अरबी और फ़ारसी के साथ उर्दू और अंग्रेजी भाषाओं का प्रभाव दोनों भाषाओं पर पड़ने लगा।

अब संस्कृत की पृष्ठभूमि में विकसित तेलुगु शब्दों में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों के तत्सम और तद्भव रूप स्थिर होने लगे। 1968 में आन्ध्र प्रदेश में तेलुगु अकादमी की स्थापना की गयी। पाठशाला शिक्षा से लेकर महाविद्यालय स्तर तक की पाठ्यपुस्तकों के निर्माण का कार्य तेलुगु अकादमी की ओर से हुआ था। तेलुगु भाषा के माध्यम से पाठ्य पुस्तकों को तैयार करने में 21 ज्ञान क्षेत्रों से संबंधित तेलुगु शब्दावलियाँ तैयार की गयी है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग की ओर से विकसित नियमों केअनुसार तेलुगु में भी 1969 में कुछ सूत्रों का विकास किया गया है। तेलुगु अकादमी द्वारा नये शब्दों की रूप-कल्पना के साथ वैज्ञानिक एवं तकनीकी रचनाओं का लेखन में भी इसका योगदान अद्भुत रहा।